

**दुआ-31****दुआए तौबा****बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

ऐ माबूद! ऐ वह जिसकी तौसीफ़ से वस्फ़ करने वालों के तौसीफी अल्फ़ाज़ कासिर हैं। ऐ वह जो उम्मीदवारों की उम्मीदों का मरकज़ है। ऐ वह जिसके हाँ नेकोकारों का अज़्र ज़ाया नहीं होता। ऐ वह जो इबादतगुजारों के खौफ़ की मन्ज़िले मुन्तहा है। ऐ वह जो परहेज़गारों के बीम व हेरास की हद्दे आखिर है यह उस षख्स का मौकुफ़ है जो गुनाहों के हाथों में खेलता है और खताओं की बागों ने जिसे खींच लिया है और जिस पर गालिब आ गया है। इसलिये तेरे हुक्म से लापरवही करते हुए उसने (अदाए फ़र्ज़) में कोताही की और फ़रेबखोर्दगी की वजह से तेरे मुनहेयात का मुरतकब होता है। गोया वह अपने को तेरे कब्ज़ए कुदरत में समझता ही नहीं है और तेरे फ़ज़्ल व एहसान को जो तूने उस पर किये हैं मानता ही नहीं है मगर जब उसकी चष्मे बसीरत वा हुई और उस कोरी व बे बसरी के बादल उसके सामने से छटे तो उसने अपने नफ़्स पर किये हुए जुल्मों का जाएज़ा लिया और जिन जिन मवारिद पर अपने परवरदिगार की मुखालफ़तों की थी उन पर नज़र दौड़ाई तो अपने बड़े गुनाहों को (वाक़ेअन) बड़ा और अपनी अज़ीम मुखालफ़तों को (हकीकतन) अज़ीम पाया तो वह इस हालत में के तुझसे उम्मीदवार भी है और षर्मसार भी, तेरी जानिब मुतवज्जो हुआ और तुझ पर एतमाद करते हुए तेरी तरफ़ रागिब हुआ और यकीन व इतमीनान के साथ अपनी ख्वहिश व आरजू को लेकर तेरा क़स्द किया और (दिल में) तेरा खौफ़ लिये हुए खुलूस के साथ तेरी बारगाह का इरादा किया इस हालत में के तेरे अलावा उसे किसी से गरज़ न थी और तेरे सिवा उसे किसी का खौफ़ न था। चुनांचे वह आजिज़ाना सूरत में तेरे सामने आ खड़ा हुआ और फ़रवतनी से अपनी आंखें ज़मीन में गाड़ लीं और तज़ल्लुल व इन्केसा र से तेरी अज़मत के आगे सर झुका लिया और अज्ज़ व नियाज़मन्दी से अपने राज़ हाए दरदने परदा जिन्हें तू उससे बेहतर जनता है तेरे आगे खोल दिये और आजिज़ी से अपने वह गुनाह जिनका तू उससे ज़्यादा हिसाब रखता है एक एक करके शुमार किये और इन बड़े गुनाहों से जो तेरे इल्म में उसके लिये मोहलक और बदआमालियोंसे जो तेरे फैसले के मुताबिक़ उसके लिये रूसवाकुन हैं, दाद व फ़रयाद करता है। वह गुनाह के जिनकी लज़ज़त जाती रही है और उनका वबाल हमेषा के लिये बाकी रह गया है।

ऐ मेरे माबूद! अगर तू उस पर अज़ाब करे तो वह तेरे अद्ल का मुनकिर नहीं होगा। और अगर उससे दरगुज़र करे और तरस खाए तो वह तेरे अफ़ो को कोई अजीब और बड़ी बात नहीं समझेगा। इसलिये के तू वह परवरदिगारे करीम है जिसके नज़दीक़ बड़े से बड़े गुनाह को भी

बख्श देना कोई बड़ी बात नहीं है। अच्छा तो ऐ मेरे माबूद! मैं तेरी बारगाह में हाज़िर हूँ तेरे हुक्मे दुआ की इताअत करते हुए और तेरे वादे का ईफ़ा चाहते हुए जो कुबूलियते दुआ के मुताल्लिक तूने अपने उस इरषाद में किया है- "मुझसे दुआ मांगो तो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूँगा।" खुदावन्दा! मोहम्मद (स०) और उनकी आल (अ०) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी मग़फ़ेरत मेरे षामिले हाल कर, जिस तरह मैं (अपने गुनाहों का) इकरार करते हुए तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ हूँ और उन मक़ामात से जहाँ गुनाहों से मग़लूब होना पड़ता है मुझे (सहारा देकर) ऊपर उठा ले जिस तरह मैंने अपने नफ़्स को तेरे आगे (खाके मज़िल्लत) पर डाल दिया है और अपने दामने रहमत से मेरी परदापोशी फ़रमा जिस तरह मुझसे इन्तेक़ाम लेने में सब्र व हिल्म से काम लिया है।

ऐ अल्लाह! अपनी इताअत में मेरी नीयत को इसतेवार और अपनी इबादत में मेरी बसीरत को क़वी कर और मुझे उन आमाल के बजा लाने की तौफ़ीक़ दे जिनके ज़रिये तू मेरे गुनाहों के मैल को धो डाले और जब मुझे दुनिया से उठाए तो अपने दीन और अपनी नबी मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम के आईन पर उठा।

ऐ माबूद! मैं इस मक़ाम पर अपने छोटे बड़े गुनाहों, पोषीदा व आषकारा मासियतों और गुज़िष्ता व मौजूदा लग्ज़िषों से तौबा करता हूँ उस षख्स की सी तौबा जो दिल में मासियत क खयाल भी न लाए और गुनाह की तरफ़ पलटने का तसव्वुर भी न करे। खुदावन्दा! तने अपनी मोहकम किताब में फ़रमाया है के तू बन्दों की तौबा कुबूल करता है और गुनाहों को माफ़ करता है और तौबा करने वालों को दोस्त रखता है। लेहाज़ा तू मेरी तौबा कुबूल फ़रमा जैसा के तूने वादा किया है, और मेरे गुनाहों को माफ़ कर दे जैसा के तूने ज़िम्मा लिया है। और हस्बे क़रारदाद अपनी मोहब्बत को मेरे लिये ज़रूरी क़रार दे और मैं तुझसे ऐ मेरे परवरदिगार यह इकरार करता हूँ के तेरी नापसन्दीदा बातों की तरफ़ रूख़ नहीं करूँगा और यह क़ौल व क़रार करता हूँ के क़ाबिले मज़म्मत चीज़ों की तरफ़ रूजू न करूँगा और यह अहद करता हूँ के तेरी तमाम नाफ़रमानियों को यकसर छोड़ दूँगा।

बारे इलाहा! तू मेरे अमल व किरदार से खूब आगाह है, अब जो भी तू जानता है उसे बख़श दे और अपनी कुदरते कामेला से पसन्दीदा चीज़ों की तरफ़ मुझे मोड़ दे। ऐ अल्लाह! मेरे ज़िम्मे कितने ऐसे हुक्क हैं जो मुझे याद हैं, और कितने ऐसे मज़लिमे हैं जिन पर निसयान का पर्दा पड़ा हुआ है। लेकिन वह सब के सब तेरी आंखोंके सामने हैं। ऐसी आंखें जो ख़्वाब आलूदा नहीं होतीं और तेरे इल्म में हैं ऐसा इल्म जिसमें फ़रोगज़ाप्त नहीं होती। लेहाज़ा जिन लोगों का मुझ पर कोई हक़ है उसका उन्हें एवज़ देकर इसका बोझ मुझसे बरतरफ़ और इसका बार हल्का कर

दे, और मुझे फिर वैसे गुनाहों के इरतेकाब से महफूज रख। ऐ अल्लाह! मैं तौबा पर कायम नहीं रह सकता मगर तेरी ही निगरानी से, और गुनाहों से बाज नहीं आ सकता मगर तेरी ही क़वत व तवानाई से, लेहाज़ा मुझे बेनियाज़ करने वाली क़वत से तक़वीयत दे और (गुनाहों से) रोकने वाली निगरानी का जिम्मा ले।

ऐ अल्लाह! वह बन्दा जो तुझसे तौबा करे और तेरे इल्मे ग़ैब में वह तौबा शिकनी करने वालों और गुनाह व मासियत की तरफ़ दोबारा पलटने वाला हो तो मैं तुझसे पनाह माँंगता हूँ के उस जैसा हूँ। मेरी तौबा को ऐसी तौबा करार दे के उसके बाद फिर तौबा की एहतियाज न रहे जिससे गुज़िप्ता गुनाह महो हो जाएं और जिन्दगी के बाक़ी दिनों में (गुनाहों से) सलामती का सामान हो। ऐ अल्लाह! मैं अपनी जेहालतों से उज़्ज़र ख़्वाह और अपनी बदआमालियों से बख़िष का तलबगार हूँ। लेहाज़ा अपने लुत्फ़ व एहसान से मुझे पनाहगाह रहमत में जगह दे और अपने तफ़ज़्जुल से अपनी आफ़ियत के परदे में छुपा ले। ऐ अल्लाह! मैं दिल में गुज़रने वाले ख़यालात और आंख के इषारों और ज़बान की गुफ़्तगुओं, गरज़ हर उस चीज़ से जो तेरे इरादे व रेज़ा के ख़िलाफ़ हो और तेरी मोहब्बत के हुद्द से बाहर है, तेरी बारगाह में तौबा करता हूँ। ऐसी तौबा जिससे मेरा हर हर अज़ो अपनी जगह पर तेरी अक़ूबतों से बचा रहे और उन तकलीफ़ देह अज़ाबों से जिनसे सरकष लोग ख़ाएफ़ रहते हैं महफूज रहे। ऐ माबूद! यह तेरे सामने मेरा आलमे तन्हाई, तेरे ख़ौफ़ से मेरे दिल की धड़कन, तेरी हैबत से मेरे आज्ञा की थरथरी, इन हालतों पर रहम फ़रमा। परवरदिगारा मुझे गुनाहों ने तेरी बारगाह में रूसवाई की मन्ज़िल पर ला खड़ा किया है। अब अगर चुप रहूँ तो मेरी तरफ़ से कोई बोलने वाला नहीं है और कोई वसीला लाऊँ तो शिफ़ाअत का सज़ावार नहीं हूँ। ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमाँ और अपने करम व बख़िष को मेरी ख़ताओं का शफ़ीअ करार दे और अने फ़ज़ल से मेरे गुनाहों को बख़ष दे और जिस सज़ा का मैं सज़ावार हूँ वह सज़ा न दे और अपना दामने करम मुझ पर फैला दे और अपने परदए अफ़ो व रहमत में मुझे ढांप ले और मुझसे इस जी इक्तेदार षख़्स का सा बरताव कर जिसके आगे कोई बन्दाए ज़लील गिड़गिड़ाए तो वह उस पर तरस ख़ाए या इस दौलत मन्द का सा जिससे कोई बन्दाए मोहताज लिपटे तो वह उसे सहारा देकर उठा ले।

बारे इलाहा! मुझे तेरे (अज़ाब) से कोई पनाह देने वाला नहीं है। अब तेरी क़वत व तवानाई ही पनाह दे तो दे। और तेरे यहाँ कोई मेरी सिफ़ारिश करने वाला नहीं अब तेरा फ़ज़ल ही सिफ़ारिश करे तो करे। और मेरे गुनाहों ने मुझे हरासां कर दिया है। अब तेरा अफ़ो व दरगुज़र ही मुझे मुतमईन करे तो करे। यह जो कुछ मैं कह रहा हूँ इसलिये नहीं के मैं अपनी बद आमालियों से नावाक़िफ़ और अपनी गुज़िश्ता बदकिरदारियों को फ़रामोश कर चुका हूँ बल्कि इसलिये के तेरा

आसमान और जो उसमें रहते सहते हैं और तेरी ज़मीन और जो उस पर आबाद हैं। मेरी निदामत को जिसका मैंने तेरे सामने इज़हार किया है, और मेरी तौबा को जिसके ज़रिये तुझसे पनाह मांगी है सुन लें। ताके तेरी रहमत की कारफरमाई की वजह से किसी को मेरे हाले ज़ार पर रहम आ जाए या मेरी परेशाँहाली पर उसका दिल पसीजे तो मेरे हक़ में दुआ करे जिसकी तेरे हाँ मेरी दुआ से ज़्यादा सुनवाई हो। या केई ऐसी सिफ़ारिश हासिल कर लूं जो तेरे हाँ मेरी दरख्वास्त से ज़्यादा मोअस्सर हो और इस तरह तेरे ग़ज़ब से निजात की दस्तावेज़ और तेरी खुशनुदी का परवाना हासिल कर सकूं।

ऐ अल्लाह! अगर तेरी बारगाह में निदामत व पशेमानी ही तौबा है तो मैं पशेमान हूँ। और अगर तर्के मासियत ही तौबा व अनाबत है तो मैं तौबा करने वालों में अक्वल दर्जा पर हूँ। और अगर तलबे मग़फ़ेरत गुनाहों को ज़ाएल करने का सबब है तो मग़फ़ेरत करने वालों में से एक मैं भी हूँ। खुदाया जबके तूने तौबा का हुक्म दिया है और कुबूल करने का जिम्मा लिया है और दुआ पर आमादा किया है और कुबूलियत का वादा फ़रमाया है तो रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर और मेरी तौबा को कुबूल फ़रमा और मुझे अपनी रहमत से नाउम्मीदी के साथ न पलटा क्योंकि तू गुनहगारों की तौबा कुबूल करने वाला और रूजू होने वाले ख़ताकारों पर रहम करने वाला है।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने उनके वसीले से हमारी हिदायत फ़रमाई है। तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल कर, जिस तरह उनके ज़रिये हमें (गुमराही के भंवर से) निकाला है। तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल कर, ऐसी रहमत जो क़यामत के रोज़ और तुझसे एहतियाज के दिन हमारी सिफ़ारिश करे इसलिये के तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है और यह अम्र तेरे लिये सहल व आसान है।